7

ऐसे विमल भाव जब पावैं...

न मानत यह जिय निपट अनारी,
सिख देख सुगुरु हितकारी ।। टेक ।।
कुमतिकुनारि संग रति मानत, सुमति सुनारि बिसारी ।।
नर परजाय सुरेश चहें सो, चख विषविषय विगारी ।
त्याग अनाकुल ज्ञान चाह, पर–आकुलता विसतारी ।।1।।

अपना भूल आप समतानिधि, भवदुख भरत भिखारी ।
परद्रव्यनकी परनतिको शठ, वृथा वनत करतारी ।।2।।

जिस कषाय–दव जरत तहां, अभिलाष छटा धृत डारी ।
दुखस डरे करै दुःखकारन ते नित प्रीति करारी ।। 3 ।।

अतिदुर्लभ जिनवेन श्रवनकरि, संशयमोह निवारी ।
'दौल' स्वपर–हित–अहित जानके, होवहु शिवमग चारी ।।4।।

सद्गुरू कल्याणकारी शिक्षा दे रहे हैं किन्तु यह जीव अत्यन्त अनाड़ी (अज्ञानी) है जो उस शिक्षा को नहीं मानता। अहो! यह जीव सुबुद्धिरूपी सुन्दर स्त्री को तो भूल गया है और कुबुद्धिरूपी बुरी स्त्री के साथ रहकर सुख मान रहा है ।।टेक।।

जिस मनुष्य पर्याय को इन्द्र भी चाहता है उस पर्याय को इन्द्रिय विषयरूपी विष खाकर बिगाड़ रहा है। अपने आकुलता रहित ज्ञानस्वभाव की अभिलाषा का तो इसने त्याग कर रखा है और परपदार्थ विषय सम्बन्धी आकुलता बढ़ा रखी है ।।१।।

यह जीव यद्यपि स्वयं समता रूपी वैभव का भण्डार है किन्तु उसे भूलकर भिखारी बनकर संसार के दुःखों को सहन कर रहा है। और व्यर्थ ही परपदार्थों की परिणति का कर्ता बन रहा है ।।२।।

अपने अंदर जो कषाय की आग जल रही है उसमें इच्छारूपी घी डालकर उसे और अधिक बढ़ाने का काम कर रहा है। यह जीव यद्यपि दुःख से डरता है फिर भी सदैव दुःख के कारणों से बहुत अनुराग करता है ।।३।।

अतः महाभाग्य से प्राप्त जिनेन्द्र भगवान के वचन सुनकर संशय और मोह का निवारण करना चाहिये। कविवर पण्डित दौलतरामजी कहते हैं अपनी आत्मा के हित और अहित जानकर निश्चित ही हमें मोक्षमार्गी होना है ।।४।।